गोस्वामी तुलसीदासजी द्वारा रचित

रुद्राष्टकम्

श्लोक - १

नमामीशमीशान-निर्वाणरूपं विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपम् ।
अजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहम् ॥

श्लोकार्थ :- हे ईश्वर! आप ही सूर्यरूप में व्यक्त हुए हैं, आप मुक्तस्वरूप, अजन्मा, निर्गुण, निर्विकल्प स्वरूप, पूर्णकाम हैं, ऐसे आप ही अनेकों रूपों में व्यक्त हुए हैं। आप चेतनता रूपी आकाश होकर सर्व में वास करते हैं। ऐसे वेदस्वरूप आपको हम नमस्कार करते हैं।

श्लोक - २

निराकारमोंकारमूलं तुरीयं गिरा-ग्यान-गोतीतमीशं गिरीशम् ।
करालं महाकालकालं कृपालं गुणागारसंसारपारं नतोऽहम् ॥

श्लोकार्थ :- हे गिरिश! आपको हमारा नमस्कार हें, जो आप निराकार स्वरूप, आप ही ओंकार के मूलस्वरूप तुरीय तत्व हैं, आप वाणी, इन्द्रियां और मन के द्वारा नहीं जाने जा सकते, आप संसार से परे भयानक-काल के भी भक्षक महाकाल हैं। हे करुणानिधान ! आप समस्त गुणों की निधि हैं।

श्लोक - ३

तुषाराद्रिसंकाशगौरं गभीरं मनोभूत-कोटि-प्रभाश्री-शरीरम् ।
स्फुरन्मौलिकल्लोलिनी चारुगंगा लसद्-भालबालेन्दु कण्ठे भुजंगा ॥

श्लोकार्थ :- आप हिमालय के समान गौर हैं, गम्भीर हैं, आप का देह कोटि कोटि कामदेव की शोभा से युक्त हैं, आप की जट़ा में से कलरव करती हुई सुन्दर गंगाजी बह रही हैं, आप के ललाट में

बालचन्द्रमा और कण्ठ में सर्प शोभायमान हो रहे हैं।

श्लोक – ४

चलत्कुण्डलं शुभ्रनेत्रं विशालं प्रसन्नाननं नीलकण्ठं दयालम् ।
मृगाधीश-चर्माम्बरं मुण्डमालं प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि ॥

श्लोकार्थ :– हे नीलकण्ठ! आपके कानों में कुण्डल झूल रहे है, आप के प्रसन्न मुख पर विशाल नेत्र सुन्दर भौंहों से युक्त है। आप दयालु हैं। हे प्रिय शंकर! सिंह के चर्म का वस्त्र और खोपड़ी की माला को धारण किये हुए आप सब के नाथ का हम भजन करते हैं।

श्लोक – ५

प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं अखण्डं अजं भानुकोटिप्रकाशम् ।
त्रयीशूलनिर्मूलनं शूलपाणिं भजेऽहं भवानी-पतिं भावगम्यम् ॥

श्लोकार्थ :– हे भवानीपति! आप प्रचण्ड हैं, श्रेष्ठ हैं, तेजस्वी, परमेश्वर, अखण्ड, अजन्मास्वरूप हैं। आप कोटि कोटि सूर्य के समान प्रकाशमान हैं। हे त्रिशूलधारी! आप ही हमारे आधि दैविक आदि तीनों तापों का समूल नाश करने वाले हैं। आप भक्ति पूर्ण मन से ही पाये जा सकते हैं।

श्लोक – ६

कलातीत-कल्याण-कल्पान्तकारी सदा सज्जनानन्ददाता पुरारी ।
चिदानन्दसन्दोह मोहापहारी प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी ॥

श्लोकार्थ :– हे प्रभु! आप समस्त कलाओं से परे है, कल्याणस्वरूप हैं। हे त्रिपुरारि! आप ही सृष्टि के प्रलय करने वाले हैं। हे चिदानन्द! आप सदैव सन्मार्ग पर चलने वालों को सुख देते हैं। हे मोह विनाशक! हे कामादि! आप हम पर प्रसन्न होइएं।

श्लोक – ७

न यावत् उमानाथ-पादारविन्दं भजन्तीह लोके परे वा नराणाम् ।
न तावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशं प्रसीद प्रभो सर्व भूताधिवासम् ॥

श्लोकार्थ :– हे प्रभु! जब तक कोई आप उमापति के चरणों का कोई सेवन नहीं करता हैं, तब तक उनका इस लोक अथवा पर लोक के सन्ताप का नाश नहीं होता हैं, न तो उसे सुख और शान्ति प्राप्त होती है। हे अन्तर्यामी! आप हम पर प्रसन्न होइएं।

श्लोक - ८

न जानामि योगं जपं नैव पूजां नतोऽहं सदा सर्वदा शम्भु तुभ्यम् ।
जराजन्मदुःखौध-तातप्यमानं प्रभो पाहि आपन्नमामीश शम्भो ॥

श्लोकार्थ :- हे प्रभु! हम न तो योग जानते हैं, और न ही पूजा। हम तो सिर्फ आपको नमस्कार ही कर सकते हैं। हम जरा, जन्म आदि दुःख के समूह से सन्तप्त हैं। हे प्रभु! हम आपकी शरण्रा में आएं हैं! हे ईश्वर! हे शम्भु! आप हमारी रक्षा कीजिएं।

श्लोक - ९

रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतुष्टये ।
ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति ।

श्लोकार्थ :- जो भी मनुष्य तुलसीदासजी द्वारा रचित इन शिवजी को प्रसन्न करने वाले रुद्राष्टक का भक्तिपूर्वक पाठ़ करता हैं उन पर भगवान शंकर प्रसन्न होते हैं।